|  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| **ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL, \_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_** | | | | | |
| **WORKSHEET-CYCLE \_\_\_\_\_\_** | | | | | |
| **SUBJECT-HINDI** | |  |  |  | **CLASS-11** |
| **LESSON- घर की याद** | | | | | **MODULE-1** |
| **NAME OF THE STUDENT** | |  | | | |
| **ROLL NO.** |  | |  | **DATE:** |  |
| **MAX MARKS:** |  | | **MARKS OBTAINED** | |  |

**1. गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 2X5=10**

लंबे बेंतवाले हँसुवे को लेकर वह घर से इस उद्देश्य से निकला था कि अपने खेतों के किनारे उग आई काँटेदार झाड़ियों को काट-छाँटकर साफ़ कर आएगा। बूढ़े वंशीधर जी के बूते का अब यह सब काम नहीं रहा। यही क्या, जन्म भर जिस पुरोहिताई के बूते पर उन्होंन घर-संसार चलाया था वह भी अब वैसे कहाँ कर पाते हैं। यजमान लोग उनकी निष्ठा और संयम के कारण ही उनपर श्रद्धा रखते हैं लेकिन बुढ़ापे का जर्जर शरीर अब उतना कठिन श्रम और व्रत-उपवास नहीं झेल पाता। सुबह-सुबह जैसे उससे सहारा पाने की नियत से ही उन्होंने गहरा निःश्वास लेकर कहा था-

‘आज गणनाथ जाकर चंद्रदत्त जी के लिए रुद्रीपाठ करना था अब मुश्किल ही लग रहा है। यह दो मील की सीधी चढ़ाई अब अपने बूते की नहीं। एकाएक ना भी नहीं का जा सकता,कुछ समझ में नहीं आता।’

(क) कहानी तथा उसके लेखक का नाम लिखिए।

(ख) वंशीधर कौन हैं? उन्होंने जीवन-भर कैसे आजीविका चलाई?

(ग) वंशीधर ने अपनी मुश्किलें किसके सामने कहीं और क्यों ?

(घ) कौन, किस उद्देश्य से हँसुवे को लेकर निकला?

(ड.) लोग वंशीधर का सम्मान क्यों करते हैं?

**पेज (1)**

**2. गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 2x4=8**

इस बार मास्टर सिंह ने उसके लाए हुए बेंत का उपयोग करने की बजाय ज़बान की चाबुक लगा दी थी, ‘तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ कहाँ से लगेगा इसमें?’ अपने थैले से पाँच-छह दराँतियाँ निकालकर उन्होंने धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी थीं। किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। धनराम हाथ-पैर चलाने लायक हुआ ही था कि बाप ने उसे धौंकनी फूँकने या सान लगाने के कामों में उलझाना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगा। फर्क इतना ही था कि जहाँ मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी पसंद की बेंत चुनने की छूट दे देते थे वहाँ गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे और जरा-सी गलती होने पर छड़,बेंत,हत्था जो भी हाथ लग जाता उसी से अपने प्रसाद दे देते। एक दिन गंगाराम चल बसे तो घनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत संभाल ली और पास-पड़ोस के गाँव वालों को याद नहीं रहा वे कब गंगाराम के आफ़र को धनराम का आफ़र कहने लगे थे।

(क) ‘जबान की चाबुक’का क्या आशय है? त्रिलोक सिंह ने जबान की चाबुक क्यों लगाई?

(ख) धनराम के पिता ने उसे कौन-सी विद्या दी और कैसे?

(ग) अध्यापक और लोहार के दंड देने के क्या-क्या ढंग थे?

(घ) धनराम किस प्रकार कामकाजी बन गया?

---------------------------------------------------------------------------

**पेज (2)**